प्रधानमंत्री श्री चरण सिंह का भाषण
32वें भारतीय गणतंत्र के दिवस के अवसर पर

दिनांक : 15–8–1979 स्थान : लाल किला

मेरे देशवासियो, आज हम अपने इस मुल्क की आजादी की 32वीं वर्षगांठ मना रहे हैं। अंग्रेजों के दो सौ वर्ष के बाद महात्मा गांधी की तपस्या और हमारे लीडरों के प्रयास और कुर्बानियों के बल पर यह देश आजाद हुआ था। ऐसे मौके पर हमको राष्ट्रपिता और उसके सहयोगियों के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करना उचित मालूम होता है। लेकिन केवल श्रद्धांजलि अर्पित पेश करने से काम चलने वाला नहीं है। मैं केवल बीस मिनट के अन्दर बहुत संक्षेप में आपसे कुछ बातें करना चाहूँगा और आशा करता हूँ कि आप शांति से सुनें।

अभी यहां केन्द्रीय गवर्नमेंट में जो तब्दीली आई है, वो प्रजातांत्रिक तरीके से और शांतिपूर्ण तरीके से आई है। लोग तरह–तरह की बातें उसके सिलसिले में कहते हैं और कहते हैं कि यह संविद गवर्नमेंट है, किस प्रकार चलेगी, लेकिन मैं, दोस्तो आपको बता देना चाहता हूँ कि जो जनता गवर्नमेंट थी वह संविद गवर्नमेंट थी और उससे बेहतर नहीं थी। नाम एक था, लेकिन वो जनता गवर्नमेंट थी वह संविद गवर्नमेंट थी और उसके कई घटक थे।

अब तफसील में न जाकर केवल एक संकेत करना चाहूँगा कि कुछ लोग जिस सीढ़ी के जरिये सत्ता के पद पर पहुंचे थे, उन्हाने उसी सीढ़ी को ठुकराने की कोशिश की। (तालियां)

मैं 24 जून को अपने निकटतम साथी श्री राजनारायण जी से सार्वजनिक रूप से अपना मतभेद प्रकट कर चुका था। लेकिन उसके बाद की जो घटनायें हुई हैं, हमको मजबूर होकर उस संविद गवर्नमेंट को छोड़ना पड़ा, मुझको आर मेरे साथियों को। आज कांग्रेस और भारतीय लोक दल और हमारे सामाजिक दल, समाजवादी दल के दोस्त और महाराष्ट्र की पीजेन्ट्स एण्ड वर्कर्स पार्टी और कम्युनिस्ट पार्टी के लोग जिन्होंने अभी जुलाई के पिछले सप्ताह में इस गवर्नमेंट के हक में अपनी वोट दी थी, अपनी इच्छा व्यक्त की थी, उसका अनुमादन किया था, उन सबको मिलाकर दो सौ से अधिक– घटक कहिये, गवर्नमेंट कहिये, संविद कहिये, सरकार चले। जिस रोज कोई और लोग, कोई और पार्टियां, कोई और नेता लोग, कोई और व्यक्ति इससे बड़ा दल बना लेंगे और हमको इस प्रकार की चुनौती देंगे कि जिससे हमको यह महसूस हो कि हम अल्पमत में हैं, हमको गवर्नमेंट छोड़ने में एक मिनट की देर नहीं लगेगी। (तालियां) और मैं और मेरे साथी मध्यावधि चुनाव नहीं चाहते। उसमें बड़ा खर्चा होता है, बड़ी परेशानी होती है और मैं समझता हूँ कि किसी दल के भी लोग नहीं चाहते। लेकिन अगर मजबूरी हुई तो फिर हम आप लोगों की खिदमत में हाजिर होंगे, आपका मत और विश्वास प्राप्त करने के लिए और जिन साथियों का मैंने जिक्र किया है, उनको मिलाकर एक संगठित दल बनेगा, जिसको बहुमत से आपका विश्वास प्राप्त होगा सारे देश के अन्दर।

अब, अपने देश के सामने कई समस्याएं जो मुंहबाये खड़ी हैं। सबसे अधिक है गरीबी। देश के एक सौ पच्चीस मुल्कों में हमारा नम्बर एक सौ ग्यारहवां आता है। एक सौ दस देश हमसे मालदार हैं। तीन साल पहले हमारा नम्बर एक सौ चार था। तीन साल के अन्दर हम खिसक कर एक सौ ग्यारहवीं पोजीशन पर आ गये हैं, यह हमारी गरीबी का हाल है।

दूसरी समस्या बेरोजगारी की है। जिस वक्त जनता पार्टी ने बागडोर संभाली थी देश की, उस वक्त से लेकर अब तक पच्चीस लाख और नये नौजवानों ने अपना नाम काम दिलाऊ दफ्तरों में दर्ज किया है, पच्चीस लाख लड़कों ने, अर्थात बेरोजगारी बढ़ती जाती है। गांवों के अन्दर पढ़े–लिखे और बेपढ़े लिखे लोग भी बेरोजगार हैं। शहर के अन्दर पढ़े–लिखे लड़के रोजगार के...........दर–दर फिरते हैं। तो बेरोजगारी हमको मिटानी है।

तीसरी समस्या हमारे यहां यह है आर्थिक क्षेत्र में, कि गरीब और अमीर का अन्तर बजाए घटने के बढ़ता जा रहा है। अंग्रेजों के जमाने में भी अन्तर था। सभी जगह अन्तर होता है थोड़ा–बहुत, और अन्तर पूर्णतः मिट जाये, यह कभी मुमकिन नहीं हो सकता। लेकिन अच्छी गवर्नमेंट वही मानी जायेगी जिसमें अन्तर बजाए बढ़ने के कम हो जाये। लेकिन अब तक हमारे देश में आजादी के बाद यह अन्तर बजाए कम होने के, यह खाई पटने के, बजाए कम होने के, कम चौड़ी होने के, ज्यादा चौड़ी हो गई। चंद आदमियों के हाथ में आर्थिक सत्ता का केन्द्रीयकरण हो गया। तो यह समस्या अपने देश के सामने है। इसके अतिरिक्त कारणों में, मैं जाना नहीं चाहता, लेकिन समाज के अन्दर आपस में टेंशस हैं, तनाव है। गरीब लोग हरिजन लोग, और कमजोर लोग कुछ क्षेत्रों में अपने आपको इनसिक्योर समझते हैं कि हम महफूज नहीं हैं, उनमें सुरक्षा की भावना नहीं है। अल्पसंख्यक लोग हमारे, जो हिन्दुओं के अलावा दूसरे धर्म के मानने वाले हैं, उनमें भी तनाव है, जिनके कारण इस वक्त बताये नहीं जा सकते। वो कारण ऐतिहासिक हो चुके। उन कारणों को मिटाने की और देश में सुख और शांति का साम्राज्य कायम करने की इस गवर्नमेंट की भरपूर कोशिश होगी। हम अपने आपको सफल तभी मानेंगे जबकि हमको सालभर तक, पूरे साल और पूरी जितनी अवधि, हमारा चार्ज है, हमारे पास कोई खबर बलवे की और आपस के साम्प्रदायिक दंगे की न पहुंचे।

दोस्तो, इसके अलावा जो तत्काल समस्या है वह भाव बढ जाने की है। पिछली दो पंचवर्षीय योजनाओं में सीमेंट, कोयला, बिजली के उत्पादन आदि के लिए बहुत कम रुपया रखा गया था और इस साल जनता गवर्नमेंट के आखिरी छह महीनों में जनवरी से लेकर जून तक जिस प्रकार से काम हुआ कि ये जो चीजें हैं, क्रिटिकल कहिये, जो कि सारी अर्थव्यवस्था पर इनका असर पड़ता है अर्थात कोयला, बिजली, रेलवे का चलना और ये अन्न, यह क्या नाम हड़तालें होना और बंदरगाहों पर जहाजों का सामान से लदे खड़े रहना, एक–एक महीने, 45–45 रोज तक। उन सब का नतीजा यह हुआ है कि भाव बढ़ा है। ये गवर्नमेंट पूरी कोशिश करेगी और हम में से मेरे जितने साथी हैं, पूरी भरसक कोशिश करेंगे, अपने–अपने महकमे में। वे केवल दिल्ली में ही नहीं बैठे रहेंगे, वो कारखानों में जायेंगे, वो बिजली के और कोयाले की खानों में जायेंगे। हम कोशिश यह करेंगे कि उसकी पैदावार बढ़े। जब तक इन चीजों की पैदावार नहीं बढ़ती है, भाव बढ़ता रहेगा, यह मुल्क करी तरक्की नहीं करेगा। लेकिन दोस्तो, इसके साथ यह भी बात है कि जिन चीजों की कुछ कमी नहीं है, वो सामान वगैरह और भी कुछ चीजें, उनके भाव भी बढ़ रहे हैं। उसके सिलसिले में, मैं थोकदार या खुदरा व्यापारियों से अपील करूँगा कि लाभ तो हर आदमी चाहता है लेकिन ऐसा लाभ, इतना लाभ जिससे कि देश को और जनता को हानि हो, उस लाभ से, उस लालच से अपने आप को दूर करने और बचाने की कोशिश करें। बरना हमने यह तय किया है कि जिस तरह से अब तक ब्लैकमार्किटिंग, प्रोफिटियरिंग चलता रहा है, तो नहीं चलने पायेगा, आगे से, हरगिज, हरगिज नहीं चलने पायेगा।

दोस्तो, हम यह जानते हैं, हमारे कौन–कौन से वर्ग हैं जिनको कि गवर्नमेंट की तरफ से अर्थिक सहायता की आवश्यकता है। इसके बताने से पहले मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि जहां यह भाव वगैरह बढ़े हैं कुछ चीजों के, वहां खद्यान्नों की कमी नहीं। हमारे भण्डार भरे हुए हैं और उसके लिए हमको किसानों का उपकार मानना चाहिए, किसान मेहनत करता रहा है, और वर्षा नहीं होगी या कम होगी तब भी मेहनत करता रहेगा और जहां तक खाद्यान्नों का सवाल है कोई इसकी कमी इस देश में नहीं हो पायेगी। दूसरी जो एक और अच्छी किरण या सुनहरी किरण है, वो यह है कि हमारी विदेशी मुद्रा जिससे कि बाहर से हम सामान खरीद सकते हैं, जिसकी कि अपने देश में जरूरत हो, उसकी भी कोई कमी नहीं। अब मैं उन वर्गों का जिक्र कर रहा था जिनकी तरफ गवर्नमेंट को ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है। हरिजन लोग, आदिवासी लोग, भूमिहीन लोग, बेरोजगार लोग या जिनके पास कम रोजगार है और अपने देश के पचास फीसदी से अधिक किसान जिनके पास केवल एक हेक्टेयर जमीन है, चार बीघे जमीन से कम है, इन सब की तरफ गवर्नमेंट का विशेष ध्यान होगा।

अब तक इन गरीब लोगों की उपेक्षा होती रही है। प्लानिंग कमीशन का जो अभी ताजा अनुमान है, उसके अनुसार 48 फीसदी आदमी गांव में हैं और 41 फीसदी हमारे शहरों में हैं, वो लोग हैं जो कि गरीबी की लाईन है, उससे नीचे हैं अर्थात जिनको सूखा अन्न पर्याप्त मात्रा में नहीं मिल रहा है, सूखा अन्न मैं कह रहा हूँ। अन्न के भंडार पड़े हैं, आप कहते होंगे तो फिर देश के अन्दर क्यों भूख। उसका कारण यह है कि उनके पास क्रयशक्ति नहीं है, उनके पास परचेजिंग पावर नहीं है। अगर किसी आदमी के पास दो रुपये या दस रुपये नहीं हैं पैसा, अन्न खरीदने के लिए, तो अन्न की कितनी बहुतायत हो, वो भूखा ही रहेगा। लिहाजा जिनकी तरफ, जो कि बड़े–बड़े शहरों के, महलों के, और बड़ी–बड़ी दुकानों के, कोठियों के पीछे रहते हैं, जिनकी तादात 41 फीसदी मैंने बतलाई और 48 फीसदी आदमी जो कि गांव में रहते हैं, ये जो भूखे–नंगे, उनकी तरफ यह गवर्नमेंट सबसे अधिक ध्यान देगी। ये गवर्नमेंट अपने पदों पर रहने के योग्य नहीं मानी जायेगी अगर उनकी ओर सबसे अधिक ध्यान नहीं देगी।

हमारी कोशिश होगी कि हर आदमी देश के अन्दर एम्पलॉयड हो, बारोजगार हो और बेरोजगार न हो। उसके लिए खेती की पैदावार बढ़ाने की तरफ विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है और छोटे–छोटे रोजगार। जब अंग्रेज यहां आये थे, पच्चीस फीसदी आदमी उद्योग–धंधों में लगा हुआ था। आज बड़े–बड़े कारखानों के लगने के बावजूद नौ फीसदी आदमी उद्योग–धंधों में लगा हुआ है। लिहाजा ज्यादा चाहे कितने ही लाख कारें अपने देश में हो गयी हों, चाहे कितनी ही गगनचुम्बी इमारतें क्यों न बन गयी हों, दिल्ली में बन गयी हों और चाहे कितने ही लोगों के पास टेलीविजन सेट और रेडियो सेट क्यों न हों, मेरा अपना अनुमान है कि जहांगीर और औरंगजेब जमाने में सन् 1707 तक जिसके बाद देश में.................
.1857 तक डेढ़ सौ वर्ष तक, उस वक्त देश की जो माली हालत थी, आज उससे हम गरीब हैं, आज उससे हम कमजोर हैं।

मैं शहर के दोस्तों से यह कहना चाहूंगा। ये जो तरह–तरह की नुक्ताचीनियां अखबारों में और–और लोगों में बैठ–बैठ कर होती हैं, मैं उनका जवाब नहीं देना चाहता। केवल यह कहना चाहता हूँ कि व्यापार, परिवहन और उद्योग–धंधे नहीं बढ़ेंगे, और वो तब बढ़ेंगे जब खेत की पैदावार बढ़ेगी। इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं है। हमारा ध्यान होगा कि गांव में

छोटे–छोटे रोजगार कायम किये जायें। हमारी बहू–बेटियां जो आप सड़कों पर देखते हो पत्थर कूटती हुई, इनके बाप–दादे क्या करते थे, मालूम करो। कोई न कोई रोजगार आजादी के साथ, कोई न कोई दस्तकारी करते थे। वो दस्तकारियां अंग्रेजों के जमाने में खत्म हो गईं। और हमारी भी इस सिलसिले में गफलत रही है। गांव के छोटे–छोटे रोजगार गांव के अन्दर कायम करने पर अधिक बल देंगे। खेत की पैदावार बढ़ाने पर बल देगे। हमारी कोशिश यह होगी कि गांव के लोग दूसरे पेशुओं में जायें। केवल खेती में अधिक लोग लगे रहने से देश की मालदारी बढ़ने वाली नहीं है। दोस्तो, बोलने का समय है नियम के अनुसार कि बीस मिनट से ज्यादा नहीं बोला जा सकता। अभी तो मुझे बहुत सी बातें कहने को थीं, लेकिन अब सबको छोड़े देता हूँ।

अब महात्मा गांधी की दो–तीन जो शिक्षाएं थीं, उनकी तरफ आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ, अपने साथियों का और सभी कार्यकर्ताओं का। महात्मा जी का कहना यह था कि ''एन्ड्स नॉट जस्टिफाई दि मीन्स''। अगर आपका ध्येय अच्छा है तो उसको हासिल करने के लिए चाहे जिस तरह का उपाय और साधन इस्तेमाल करो, नहीं, अगर शुद्ध, पवित्र और पाक ध्येय और मकसद है तो उसके लिए जो जरिया इस्तेमाल करोगे, वो भी शुद्ध और पाक होना चाहिए। यहां सब लोगों को, आप लोगों को भी, आप से ज्यादा पब्लिक वर्कर्स को, जो भी जनसेवक हैं, उस पर ध्यान देंगे, वरना हमारे यहां भ्रष्टाचार नहीं मिटेगा। भ्रष्टाचार की कोई सीमा नहीं है और जिस देश में भ्रष्ट लोग होंगे, वो देश कभी– चाहे कोई लीडर आ जाये, कोई पार्टी बसरे इकदार हो जाये, कितने ही अच्छे प्रोग्राम क्यों न हों– वो देश कभी तरक्की नहीं कर सकता।

दूसरा; महात्मा जी का कहना यह था कि, कम से कम सार्वजनिक कार्यकर्ता के लिए, जीवन एक, लाईफ एक। इसके दो हिस्से नहीं हैं। एक प्राइवेट लाईफ है और एक पब्लिक लाईफ है– नहीं। कोई कम्पार्टमेंट्स, कोई डिब्बे नहीं होते कि सार्वजनिक जीवन अलग, प्राइवेट जीवन अलग। जिस आदमी का प्राइवेट जीवन शुद्ध नहीं होगा दोस्तो, असाधारण मामलों को छोड़कर, यह आप कह सकते हो, अनुमान लगा सकते हो कि पब्लिक जीवन भी उसका अच्छा नहीं हो सकता। वह देश की सेवा कर ही नहीं सकता।

इसके अलावा तीसरी बात, जो गांधी जी बराबर जोर देते रहे और जिसको हम भूल गये, वह यह है कि राईट्स फॉलोव......................ऑफ ड्यूटीज, बैड परफार्मेन्स। यहां हमारे चारों तरफ जोर है अधिकारों पर, मांगों पर, तनख्वाह बढ़ाने पर, भत्ते बढ़ाने पर, चारों तरफ। ठीक है, जरूरी है। लोगों के राईट्स हैं, होने चाहिए। लेकिन राइट पैदा होता है, आदमी के अपने कर्तव्य पालन करने के फलस्वरूप। हम अपना कर्तव्य पूरा नहीं करेंगे और अधिकार मागेंगे, कहां तक जायज है? हम मालदार होना चाहते हैं तो उसके लिए पुरुषार्थ और मेहनत करने की जरूरत है। मेहनत करने को हमारी कौम तैयार नहीं है। अगर, आप मुझे माफ करें, दूसरे देशों में जाओ, कारखानों में, स्कूलों में और हर तरह के दफ्तरों में, आठ बजे से काम शुरू होता है, पांच बजे तक मेहनत करता है आदमी और चालीस मिनट की बीच म केवल छुट्टी होती है। जापान का तो यह हाल है कि अगर मजदूर नाराज होता है अपने कारखाने के मालिक से, तो केवल एक काली पट्टी बांध लेता है। लेकिन हड़ताल करने की बात तो कभी नहीं सोचता है, कभी नहीं सोचता। तो दूसरे देश अगर मालदार हुए हैं तो अपने पुरुषार्थ के फलस्वरूप। हमारी कौम चाहती है आनंद भोगना, कमाना, हर तरह का आराम, बिना

उसकी कीमत अदा किये। दुनिया में कभी कोई चीज किसी को हासिल नहीं होती, न व्यक्ति विशेष को और न देश को, अगर वो उसकी कीमत अदा करने के लिए तैयार नहीं है। अगर आज पश्चिम के देश मालदार हैं, अगर इजराईल की गाय आज दुनिया में सबसे ज्यादा दूध देती है, उस रेगिस्तान में रहकर, तो उनके पुरुषार्थ के बल पर। अगर देश को उठना है, तो पुरुषार्थ करना होगा। मैं अपने आप को भी उसमें शामिल करता हूँ। अपने जो सहयोगी, मिनिस्टरान हैं, जा यहां बैठे हैं, उन सबको शामिल करता हूँ कि हमको अनवरत परिश्रम करना पड़ेगा, तब जाकर यह देश उठेगा।

अब विदेश नीति की बात रह जाती है। हमारी जो पुरानी नीति है कि हम किसी गुट विशेष से सम्बंध नहीं बनाना चाहते हैं, वो कायम है और उसी को हम अपने देश के लिए लाभकारी समझते हैं। वही हमारी नीति रहेगी। किसी भी देश बड़े से बड़े देश, की तरफ हमारा कोई विशेष झुकाव नहीं होगा। हमारा विश्वास यह है कि महात्मा जी की शिक्षा पर चल कर ही इस देश में, अन्तर्राष्ट्रीय जगत में, इन्टरनेशनल वर्ल्ड में, इस दुनिया में शांति कायम हो सकती है और लोगों को सुख मिल सकता है। आज नहीं कल, कल नहीं परसों, दुनिया इसी नतीजे पर पहुंचेगी। जहां तक दक्षिण एशिया के मुल्कों का सवाल है हमारे सम्बंध उनसे सुधरे हैं। जिनसे सुधरे नहीं हैं लेकिन हमारी आशा है कि शायद सुधर जायें। इस सिलसिले में, मैं अपने पड़ोसी, जहां के लोग कल हमारे भाई थे, पाकिस्तान का जिक्र करना चाहता हूँ। हमारी खबरें यह हैं कि वो बम बनाने की कोशिश कर रहे हैं। वो बम किसके लिए बनाया जा रहा है। चीन से तो उनकी दोस्ती है और रूस से भी उनका झगड़ा नहीं है। अफगानिस्तान तो छोटा–सा मुल्क है, उनसे भी कोई झगड़ा नहीं है। बहरहाल मैं और मेरे साथी इस नतीजे पर पहुंचे हैं और हमारे देशवासी इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि यह जो बम है ''हट इज ऐम्ड ऐट अस'', हिन्दुस्तान के लिए बनाया जा रहा है। तो मैं समझता हूँ कि विल नॉट वी फार फ्राम ट्रुथ, सच्चाई से दूर हमारा नतीजा नहीं होगा। हमने तय किया हुआ था, आज तक हमारा यही फैसला है कि हम बम नहीं बनाना चाहते। बम बनाने की दौड़ में हम नहीं पड़ना चाहते। लेकिन अगर पाकिस्तान अपने इस इरादे पर कायम रहा और बम बनाने, बम इकट्ठे करने की कोशिश करता रहा, तो मुझको और मेरे साथियों को इस सारे प्रश्न पर शायद पुनर्विचार करना होगा। (तालियां)

इन शब्दों के साथ मैं देश की सारी जनतांत्रिक शक्तियों को, जो जनतंत्र में, पंचायती राज में, जम्हूरियत में विश्वास करती हों, उन्हीं सब लोगों को जो धर्म निरपेक्षता में विश्वास करते हों, अर्थात सभी धर्मों को बराबर आजादी हो, धर्मावलम्बियों को, सबको अपने–अपने रास्ते पर चलने का पूरा हक हो, ऐसी सभी शक्तियों को अपील करना चाहता हूँ कि वो आगे बढ़कर छोटे–मोटे मतभेदों को छोड़कर इस गवर्नमेंट की, मेरे और मेरे साथियों की मदद करने की कोशिश करें।

अब मैं यह चाहूंगा कि आप लोग मेरे साथ मिलकर तीन बार जय हिन्द बोलने की कृपा करें।

जय हिन्द, जय हिन्द, जय हिन्द।

——————000——————